ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

महात्मा गाँधी की परिकल्पनाओं का भारत

मनोज कुमार

असिसटेंट प्रोफेसर, बी0एड0 विभागए सीताराम समर्पण महाविद्यालय नरैनी, बाँदा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से सम्बद्ध (उ0प्र0)

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी जी ने भारत में राम राज्य की परिकल्पना की थी। इस नाम को गाँधी जी ने स्वयं दिया और समय–समय पर इसकी व्याख्या भी की थी। गाँधी के आधार पर राम राज्य एक ऐसा राज्य होगा जिसमें लोक कल्याण की भावना प्रबल होगी इसमें समाजिक विषमता तथा अस्पृश्यता का नामो–निशान नही होगा। गाँधी जी न्यूनतम शासन के पक्षधर थे। गाँधी जी के अनुसार– **"That Government is the best which governs the least"** अर्थात् न्यूनतम शासन करने वाला तन्त्र ही सर्वोत्तम होता है। गाँधी जी राम राज्य की कल्पना करते समय मात्र राज्य की शक्ति अथवा अस्पृश्यता को ही विचार का केन्द्र बिन्दु नही मानते थे। उनके विचार का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। वह छोटे से छोटे बिन्दु पर भी व्यापक रुप से विचार करते थें।

आइये उनके विचार बिन्दुओं पर राम राज्य के सन्दर्भ में अध्ययन करें–

1- स्वराज (Swaraj)

गाँधी जी देश के विकास को गाँवों से प्रारम्भ करना चाहते थें उनके अनुसार देश के विकास का प्रथम सूत्र गाँव है। गाँव में स्वशासन प्रणाली को विकसित कर उसे पूर्ण रुप से सक्षम बनाना ही गाँधी जी के अर्थों में स्वराज था।

गाँधी जी के शब्दों में स्वराज एक पवित्र और वैदिक शब्द है। इसका अर्थ स्वशासन और स्व अनुशासन है। जो स्वतन्त्रता से भिन्न एवं विस्तृत है। वे ग्राम पंचायतों को अपने गाँवों का प्रबन्धन एवं प्रशासन का अधिकार सौप देने की वकालत करते थे। राष्ट्रीय अथवा प्रान्तीय सरकारों के ग्राम स्तर पर हस्तक्षेप की वे खिलाफत करते थे। ग्राम स्वराज के सम्बन्ध में अपनी परिकल्पना को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया– मेरे ग्राम स्वराज का आदर्श यह है कि प्रत्येक गाँव एक पूर्ण गणराज्य हो अपनी आवश्यक वस्तुओं के लिए वह पडोसियों पर निर्भर न रहे।

2. ट्रस्टीशिप ;Trusteeship Principle

ट्रस्टीशिप का मूल आधार यह है कि किसी व्यक्ति का उसकी सम्पत्ति पर भी गैर जिम्मेदाराना, अनियंत्रित और पूरा अधिकार नही है। किसी भी धनी व्यक्ति का सम्पत्ति पर तभी तक अधिकार है जब तक उसे समाज का विश्वास मिला हुआ है किन्तु तब भी वह पूरी की पूरी सम्पत्ति को निजी भोग के लिए इस्तेमाल नही कर सकता वह उतनी ही सम्पत्ति का निजी भोग कर सकेगा। जितनी देश के अन्य लोगों को प्राप्त है। गाँधी जी मानते थे कि किसी की मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति का अधिकार उसकी संतान को मिलना अमानवीय और असामाजिक है। सम्पत्ति और मानव उपलब्धियों का सभी रुप प्रकृति अथवा समाज की देन है। अतः इसका प्रयोग किसी व्यक्ति द्वारा निजी रुप से किया जाना समाज के लिए अन्याय पूर्ण है। गाँधो जी के इन विचारों के पीछे पूँजीवाद की बुराईयाँ थी।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

3. अस्पृश्यता ;Untouchability

गाँधी जी समाजिक समानता के महान हिमायती थें। वह अस्पृश्यता को सम्पूर्ण मानव जाति के लिए कलंक मानते थे। अस्पृश्यता की समस्या के साथ पूर्ण स्वराज की कल्पना असम्भव है।

अस्पृश्य जातियों के लिए उन्होनें हरिजन शब्द रचा उनके समीप रहकर समस्या के निराकरण के लिए 1932 में **हरिजन सेवक संघ** की स्थापना की इस संघ ने अस्पृश्यता निवारण, पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए तथा समानता एवं बन्धुत्व की भावना के विकास के लिए विशेष प्रयत्न किये। हरिजनों के मन्दिर में प्रवेश के लिए तथा उनमें शिक्षा के प्रसार के लिए संघ द्वारा किये गये प्रयत्न सराहनीय थे उनका कहना था– **सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं, कोई भेद नही है।**

4- बुनियादी शिक्षा ;Basic Education

गाँधी जी मनुष्य के शरीर आत्मा और भावना के सम्पूर्ण विकास क लिए शिक्षा को आवश्यक मानते थे। साक्षरता शिक्षा का न तो अन्त है और न शुरुआत यह एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है। आदर्श शिक्षा जीवन के सभी क्षेत्रों पर प्रभाव डालती है और शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा भावनात्मक विकास को पूर्णता प्रदान करती है। 1937 में बुनियादी शिक्षा को कार्यरुप देने के लिए वरिष्ठ लोगों तथा शिक्षाशास्त्रीयों का एक सम्मेलन वर्धा (महाराष्ट्र) मे आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में बुनियादी शिक्षा के सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव रखे गये–

- 07 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
- शिक्षा किसी हस्त कला को केन्द्र बनाकर दी जाये।
- शिक्षा द्वारा मानवीय एवं राष्ट्रीय गुणों का विकास किया जाये।

गाँधी जी शिक्षा का केन्द्र हस्तकला को बनाने के पक्षधर थे वास्तव में हस्तकला एक ऐसा माध्यम है जिससे व्यक्ति अपनी न्यूनतम दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। किसी व्यक्ति का समाज पर निर्भर रहना वह उचित नही समझते थें। उनकी शिक्षा का उद्देश्य लोगों को सर्वोदय की ओर ले जाना था।

5- राजनीति और धर्म ;Politics and Religion

गाँधी जी राजनीति को धार्मिक तथा अध्यात्मिक मानते थे प्रबल धार्मिक प्रवृत्ति ने उन्हें राजनीति की ओर खींचा जहाँ उन्होनें अपने धार्मिक विश्वासों– आस्तिकता, ईश्वर में अगाध श्रद्धा, आत्मबल की प्रधानता, अद्वैत की कल्पना, सर्वत्र जगत में एक ही सत्ता का व्याप्त होना, अहिंसा, सत्य, प्रेम, आस्तेय, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तों को लागू किया।

उनके अनुसार मनुष्य का सबसे बड़ा लक्ष्य आत्मा का विकास करना है। यह तभी सम्भव है जब वह अपने को समाज का अंग माने और उसके अनुरुप आचरण करे। आत्मा के विकास के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना और संघर्ष करना अनिवार्य है इसी प्रकार धर्म और राजनीति में गहरा सम्बन्ध है।

6- साध्य और साधन ;Ends and Means

गाँधी जी साधन की पवित्रता पर अधिक जोर देते थे। **उनके विचार से जिस प्रकार नीम के बीज से आम का फल नही प्राप्त किया जा सकता। उसी प्रकार अपवित्र साधनों से पवित्र उद्देश्यों की प्राप्ति नही हो सकती।**

देश को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने के लक्ष्य को वे पवित्र लक्ष्य मानते थे किन्तु इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हिंसा, छल, कपट, लूट एवं हत्या के मार्ग को अपनाना वे अनुचित मानते थे। उनका कहना

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

था साधन पवित्र होने चाहिए। यदि साधन दूषित और भ्रष्ट होगा। सत्याग्रह और अहिंसा को गाँधी जी सर्वश्रेष्ठ साधनों में से मानते थे। सत्य को वह ईश्वर की सबसे निकट की वस्तु समझते थे।

7- स्वदेशी (Swadeshi)

गाँधी जी के चिन्तन और दर्शन में मानवीयता और लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों की प्रबलता थी। भारतीयों की राजनीतिक पराधीनता के साथ–साथ वे आर्थिक पराधीनता पर भी चिन्तित रहते थे। आर्थिक पराधीनता से मुक्ति के लिए उन्होनें स्वदेशी आन्दोलन का प्रसार किया। स्वदेशी आन्दोलन पर टिप्पणी करते हुए उन्होनें कहा था कि स्वदेशी हमारे अन्तराल की भावना है जो कि हमारे सुदूर की अपेक्षा निकटतम पर्यावरण के प्रयोग एवं सेवा के लिए प्रेरित करती है। वह प्रत्येक गाँव को उत्पादकता से जोडना चाहते थे उनकी धारणा थी कि प्रत्येक गाँव को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं उत्पादन करना चाहिए मशीनों द्वारा होने वाले उत्पादनों की अपेक्षा वे लघु कुटीर उद्योग पर बल देते थे आर्थिक क्षेत्र में उनके अनुसार यही स्वदेशी है। राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी वे स्वदेशी के पक्षधर थे।

8 शोध सारांश

गाँधी जी की परिकल्पनाओं का भारत एक आदर्श भारत है। इस सम्बन्ध में गाँधी जी का चिन्तन भारत ही नही सम्पूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी है। अणु बमों के प्रलयकारी तांडव से सम्भावना से भयभीत मानव जाति को अहिंसा के मार्ग पर ले जाने की गाँधी जी की चेष्टा प्रशंसनीय है। वह स्वराज को उत्तम समझते थे तथा ट्रस्टीशिप को समाजहित का अंग मानते थे। अस्पृश्यता को समाज का कलंक व विकास का बाधक कहते थे क्योंकि कोई ऊँचा या नीचा नही है वह मानव धर्म को श्रेष्ठ कहते थे। वह समाज के निर्माण व कल्याण के लिए की जाने वाली राजनीति को सकारात्मक समझते थे। वह स्वदेशी को श्रेष्ठ बताते थे और जीवन का आधार कहते थे क्योंकि हमारी आत्मीयता का सम्बन्ध इससे जुडा होता है।

गाँधी जी के विचारों को भारत में पूर्ण रुप से नही अपनाया गया किन्तु राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उनका चिन्तन सदैव अनुसरण योग्य रहेगा यदि उनके सम्पूर्ण चिन्तन को अंगीकृत किया जाये तो समाज का सकारात्मक अभ्युदय अवश्य होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

i. लाल, रमन बिहारी (2009) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेशन।
ii. जैन, पुखराज (2007) : भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं भारतीय संविधान, आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन।
iii. गुप्ता, रामबाबू (2003) : शिक्षा दर्शन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
iv. गुप्ता, एस0पी0 (1998) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याऐं, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
v. पाण्डेय, रामशकल (2005) : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, आगरा, साहित्य प्रकाशन।
vi. योजना मासिक पत्रिका।
vii. अमर उजाला कानपुर संस्करण।
viii. दैनिक जागरण कानपुर संस्करण।